20वां नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
मेला वार्ता 2012
रविवार, 26 फरवरी, 2012

पुस्तक मेले मजबूत लोकतंत्र के परिचायक हैं : श्री सिब्बल

प्रत्येक वर्ष आयोजित हो पुस्तक मेला

''पुस्तक मेले हमारी मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था के परिचायक हैं और विचारों के आदान-प्रदान के अहम केंद्र हैं।'' यह उद्गार केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के अपने उद्घाटन भाषण में व्यक्त किए। इस अवसर पर प्रख्यात लेखक प्रो. मनोज दास अध्यक्षता कर रहे थे, जबकि विशेष अतिथि डा. मृदुला मुखर्जी थीं। कार्यक्रम के प्रारंभ में दिल्ली के विभिन्न स्कूल के बच्चों ने पुस्तक संस्कृति के प्रोन्नयन के नारों के साथ एक रैली भी निकाली। ये बच्चे श्रद्धा मंदिर स्कूल, फरीदाबाद, राजकीय इंटर कालेज, नोएडा, नवरत्न फाउंडेशन, नोएडा, केंद्रीय विद्यालय, कथालैब स्कूल, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सूरजमल विहार, अक्षय प्रतिष्ठान, वसंत कुंज, प्रथम दल्लूपुरा और त्रिलोकपुरी से आए थे।

उद्घाटन समारोह की शुरुआत नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष व प्रख्यात इतिहासविद् प्रो. विपिन चंद्रा द्वारा स्वागत से हुई। प्रो. मनोज दास ने अपने उद्बोधन में विभिन्न भाषाओं की एक-दूसरे में अनूदित हो रही पुस्तकों की संख्या में वृद्धि को एक अच्छा संकेत बताया। इस समारोह के मौके पर प्रसिद्ध इतिहासकार श्रीमती मृदुला मुखर्जी ने आजादी के लिए किताबों के योगदान का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि नेहरू, जयप्रकाश नारायण, गांधी, नम्बुदरीपाद आदि की किताबों ने जनमानस को बहुत हद तक प्रभावित किया है।

मुख्य अतिथि श्री सिब्बल ने उद्घाटन समारोह में उपस्थित विशाल जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि यह अफ्रो-एशियाई क्षेत्र का सबसे बड़ा पुस्तक मेला है। उन्होंने कहा, यह आयोजन लगातार बेहतर हुआ है। पुस्तकों

स्कूली बच्चों की पुस्तक रैली

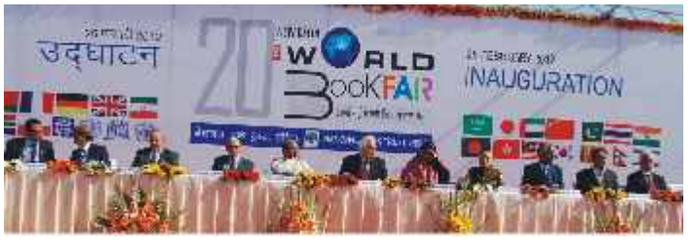

उद्घाटन समारोह में अतिथिगण

के महत्व की अहमियत पर उन्होंने कहा कि हमारे सामने किताबों को अपने जीवन का प्रमुख हिस्सा बनाने की चुनौती है। श्री सिब्बल ने कहा कि एक पाठक के रूप में उनका मानना है कि बच्चों को ज्ञान पाने के लिए कोई कीमत नहीं चुकानी पड़े और इसी लिए वे देश के प्रत्येक बच्चे के हाथ में 'आकाश' टेबलेट की योजना पर काम कर रहे हैं। इस अवसर पर श्री सिब्बल ने ब्रेल लिपि में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित, फिल्मों पर केंद्रित तीन पुस्तकों– सिनेमा ऑफ सत्यजीत रे, बलराज माय ब्रदर और दादा साहेब फालके का लोकार्पण भी किया।

पुस्तक मेला के शुभारंभ की औपचारिक घोषणा करते हुए मंत्री महोदय ने रंगबिरंगे गुब्बारों के गुच्छे आकाश में छोड़े। कार्यक्रम में स्वागत गीत का गायन दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने किया। संचालन सुश्री सुकन्या बालकृष्णन ने किया। नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

हर वर्ष करेंगे पुस्तक मेला

श्री कपिल सिब्बल ने पत्रकारों को बताया कि हम विश्व पुस्तक मेले का आयोजन हर साल करने के लिए प्रयासरत हैं। क्षेत्रीय साहित्य को पहचान दिलाने के लिए अपने मंत्रालय में अनुवाद अभियान शुरू करने की बात भी उन्होंने कही।

श्री कपिल सिब्बल द्वारा गुब्बारे उड़ा कर पुस्तक मेले का शुभारंभ

भारतीय सिनेमा के 'सौ साल' का सफर

भारत में फिल्म निर्माण को शुरू हुए लगभग सौ वर्ष हो चुके हैं। भारतीय सिनेमा के एक सदी के सफर को केंद्र में रख कर इस बार के विश्व पुस्तक मेले का थीम भारतीय सिनेमा रखा गया है। इस अवसर पर मेले के हॉल नं. 7 में एक प्रदर्शनी 'पाइंट ऑफ व्यू' का आयोजन किया गया।

फिल्मों पर पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर अरुणा वासुदेव

भारत के मुख्य निर्वाचन अधिकारी डा. एस.वाई. कुरैशी ने थीम पेवेलियन में आयोजित एक कार्यक्रम में 'पिंक रिबन टैग' का विमोचन किया। पिंक रिबन टैग लगी पुस्तकों से प्राप्त धन का एक हिस्सा कैंसर पीड़ितों के इलाज के लिए दिया जाएगा। इस कार्यक्रम में भारतीय सिनेमा के उन सितारों के पोस्टर का विमोचन भी किया जो अपनी असल जिंदगी में कैंसर से लड़े। इस कार्यक्रम का आयोजन भारतीय कैंसर सोसायटी और सागी पब्लिकेशन ने किया था।

डा. एस.वाई. कुरैशी द्वारा 'पिंक रिबन टैग' का विमोचन

साहित्यिक कल्पना को पर्दे के यथार्थ पर उतारना हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। इसी संदर्भ में मो. असदुद्दीन और अनुराधा घोष द्वारा संपादित पुस्तक 'फिल्मिंग फिक्शन : टैगोर, प्रेमचंद एंड रे' का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जानी-मानी फिल्म आलोचक और फिल्म निर्माता अरुणा वासुदेव थीं। उन्होंने कहा कि सिनेमा और साहित्य अभिव्यक्ति के दो अलग-अलग माध्यम हैं और उनकी अपनी अलग सीमाएं हैं। विमोचन के अवसर पर इरा भास्कर, शोहनी घोष और बिंद्रा बोस ने भी अपने विचार रखे।

थीम पवेलियन में ही कल शाम सत्यजीत रे द्वारा निर्देशित फिल्म 'पाथेर पांचाली' का प्रदर्शन हुआ। मेले का थीम पेवेलियन दर्शकों के लिए हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता है। इस बार इसका विषय भारतीय सिनेमा होने की वजह से यह मेले में आए दर्शकों के लिए सहज उत्सुकता जगाता है। मेला घूमने आई बी.ए. की छात्रा प्रियंका तोमर कहती हैं कि 'थीम पेवेलियन में हमेशा कुछ ना कुछ मजेदार चीजें होती रहती हैं। यहां आने के बाद लौटने का मन नहीं करता।'

बाल मंडप से

विश्व पुस्तक मेला के हॉल नंबर 14 में नेशनल बुक ट्रस्ट के एक अनुभाग राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा स्थापित बाल मंडप का उद्घाटन प्रख्यात साहित्यकार प्रो. मनोज दास ने किया। बाल मंडप में ही मुख्य चुनाव आयुक्त डा. एस.वाई. कुरैशी ने 'टंबल बुक्स' कार्यक्रम की शुरुआत की।

इस अवसर पर मनोज दास ने बच्चों से कहा, ''वे इस पुस्तक मेला में बहुत कुछ सीखेंगे। आप चाहें तो इन पुस्तकों के जरिए बहुत कुछ पा सकते हैं।''

इस दौरान राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सूरजमल विहार के बच्चों ने एक लघु नाटिका प्रस्तुत की। इसमें छह साल की बच्ची लावण्या ने एक अच्छा पाठक बनने का संदेश दिया। विकास ने 'हंसमुख बिजूका' की कहानी और श्रुति ने 'पार्ट्स ऑफ बुक्स' नामक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसके साथ-साथ नवीं और दसवीं कक्षा के छात्र-छात्राओं ने 'युवा व्यवस्था में चुनौतियों का सामना कैसे करें' विषय पर एक नाटक प्रस्तुत किया।

बाल मंडप में 'माय लिटिल इंडिया' विषय पर आयोजित हो रही दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ प्रो. मनोज दास ने किया। उन्होंने बताया कि इसी शीर्षक से नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित उनकी पुस्तक कैसे सृजित की गई थी। इस अवसर पर नेबुट्र के निदेशक एम.ए. सिकंदर, शमी पदमसिंह, और केपटाउन पुस्तक मेला की प्रतिनिधि सुश्री लुईस बेरी टेलर ने भी विचार व्यक्त किए।

'टंबल बुक्स' का शुभारंभ डा. एस.वाई कुरैशी द्वारा

सांस्कृतिक कार्यक्रम

विश्व पुस्तक मेला में आए पुस्तक-प्रेमियों के मनोरंजन हेतु दिल्ली सरकार के विभाग साहित्य कला परिषद ने प्रगति मैदान के लाल चौक पर प्रत्येक शाम सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया है। ये कार्यक्रम मूल रूप से भारत के विभिन्न प्रदेशों की लोक-संगीत की झांकी प्रस्तुत कर रहे हैं। गत शाम यहां उत्तर प्रदेश के लोकरंग की प्रस्तुति हुई, जिसमें मयूर-नृत्य, राधा-कृष्ण रास, ब्रज की होली को लोगों ने बहुत सराहा।

एक मंडप टैगोर की स्मृति में

टैगोर मंडप

जीवन के अंतिम समय में सन् 1941 में कुछ समय पहले इलाज के लिए रवींद्रनाथ टैगोर को शांति निकेतन से कोलकाता ले जाया जा रहा था तो उनकी नातिन ने कहा कि आपको मालूम है हमारे यहां नया पावर हाउस बन रहा है। इसके जवाब में उन्होंने कहा, हां पुराना आलोक चला जाएगा, नए का आगमन होगा।

20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर प्रगति मैदान के हॉल नं. 6 के ऊपरी तल पर रवींद्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती पर टैगोर पर तथा उनके द्वारा लिखित पुस्तकों की एक अभिनव प्रदर्शनी लगाई गई है। 'गुरुदेव' के नाम से विश्वविख्यात टैगोर भारत की राष्ट्रीयता के एक वैश्विक प्रतीक हैं। सन् 1913 में उन्हें साहित्य के लिए प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था। साहित्य के लिए नोबल पुरस्कार पाने वाले अब तक वे एकमात्र भारतीय हैं।

विदित हो कि गुरुदेव कवि, साहित्यकार, दार्शनिक, संगीतज्ञ और चित्रकार— सब एक साथ थे। भारत और बांग्लादेश, दो देशों के राष्ट्रगान के वे रचयिता हैं। संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान कुछ ऐसा रहा कि उनके द्वारा सृजित संगीत को 'रवींद्र संगीत' की संज्ञा दे दी गई। उन्होंने करीब 2330 गीतों की रचना की। यह संगीत बांग्ला संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। दुनिया को देखने की उनकी दृष्टि ऐसी थी कि उन्होंने देश और दुनिया के बारे में जो सोचा, लिखा और बोला उसे 'रवींद्र दर्शन' के नाम से अभिहित किया जाता है। जहां तक टैगोर के साहित्यिक अवदान का सवाल है 'गीतांजलि' कृति से वे विश्वविख्यात हैं।

प्रदर्शनी में रवींद्रनाथ के जीवन से संबंधित अनेक चित्र प्रदर्शित हैं। चित्रों के साथ उनके योगदान एवं उपलब्धियों का भी विवरण दिया गया है। टैगोर द्वारा रचित एवं उन पर रचित बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी एवं कई अन्य भाषाओं में पुस्तकों का प्रदर्शन इस प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण है। पुस्तकों को नयनाभिराम ढंग से सजाया गया है। टैगोर अपने जीवन के अंतिम दिनों में चित्रकला की ओर मुड़ गए थे और उन्होंने काफी चित्र बनाए। उनके बनाए तीसेक चित्रों को भी अच्छे ढंग से प्रदर्शित किया गया है। पुस्तक प्रेमियों एवं टैगोर मंडप देखने आए आगंतुकों की सुविधा के लिए यहां बैठने की भी व्यवस्था की गई है। साहित्य अकादेमी, संस्कृति मंत्रालय द्वारा लगाई इस प्रदर्शनी को दर्शकों का अच्छा प्रति (प्रीति) भाव मिल रहा है। हॉल में प्रवेश करते ही गुरुदेव टैगोर की एक बड़ी-सी प्रतिमा दर्शकों का ध्यान आकर्षित करती है।

गुरुदेव की जीवन यात्रा

ई-बुक्स के साथ-साथ किताबें भी जरुरी

''इंटरनेट से सूचना प्राप्त की जाती है और किताब से ज्ञान। हिंदुस्तान ज्ञान का देश है। इसलिए यहां किताबों का महत्व बना रहेगा।'' मशहूर शायर और राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद के अध्यक्ष वसीम बरेलवी ने ये विचार व्यक्त किए। वे 'उर्दू में ई-बुक्स की संभावनाएं' विषय पर आयोजित गोष्ठी में बोल रहे थे। इसी सेमिनार में बोलते हुए मशहूर पत्रकार शीबा फहमी ने कहा कि ''उर्दू प्रकाशक डिजिटल किताबों से डरे हुए हैं। इंटरनेट के कारण लोग प्रकाशकों के मोहताज नहीं रहे हैं। पुस्तकालय बंद होते जा रहे हैं, इस लिए किताबों का ई-बुक्स में आना स्वागत योग्य कदम है।''

'इंकलाब' के संपादक शकील शम्सी ने इंटरनेट पर उर्दू के लिए तकनीकी बाधाओं को दूर करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने नयी पीढ़ी के किताबों से दूर होने को बड़ा खतरा बताया। निष्ठा जायसवाल, सी-डैक ने इस विषय के तकनीकि पक्षों को सामने रखा।

इस अवसर पर चौथी दुनिया की वसीम राशिदी, उर्दू सहारा के असर राजा, शायर तहसीव मुनव्वर, प्रकाशक आरिफ इकबाल समेत अन्य गणमान्य लोगों ने भी अपने विचार रखे।

पुस्तक लोकार्पण

हॉल नं. 14 में वरिष्ठ साहित्यकार मनोज दास ने डा. नंदिनी साहु की किताब 'फोक्लोर एंड द मोडर्निटिज' का लोकार्पण किया। इस किताब में भारतीय लोकसाहित्य का आधुनिक दौर में दशा-दिशा पर विचार किया गया है।

अनुभव प्रकाशन द्वारा प्रताप सिंह की कृति 'सिनेमा का जादुई सफर' का लोकार्पण प्रख्यात साहित्यकार डा. रामदरश मिश्र ने किया। इस अवसर पर डा. श्याम निर्मम, मनमोहन बाबा, रविन्द्र वर्मा आदि ने विचार व्यक्त किए।

विमर्श

सिविल सेवा प्रवेश परीक्षा (यू.पी.एस.सी.) में शामिल होने वाले युवाओं को सफल होने के गुर सिखाने के लिए एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। यूनीक पब्लिशर प्रा.लि. के निदेशक अमरजीत चोपड़ा ने कहा कि जीवन के विकास में शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। इस सेमिनार में अल्टरनेटिव लर्निंग सिस्टम के निदेशक जो.जो. मैथ्यू ने भी अपने विचार रखे।

आज के कार्यक्रम 26 फरवरी 2012, रविवार

तिथि/समय	कार्यक्रम	स्थान	हॉल नं.	आयोजक
प्रातः 11 से दोपहर 1 बजे तक	कार्यशाला डीवीडी	सभागार 1	6	फ्रोजन थॉट्स, चेन्नई
प्रातः 11 से दोपहर 1 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 2	6	ग्राफिक सिंडिकेट, नई दिल्ली
प्रातः 11 से दोपहर 1 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 3	14	बसंती प्रकाशन, नई दिल्ली
दोपहर 1 से 3 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 1	6	रीड एल्सवेयर इंडिया प्रा.लि., नई दिल्ली
दोपहर 1 से 3 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 2	6	लक्ष्मीप्रिया एन., बेंगलुरु
दोपहर 1 से 3 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 3	14	जूली पब्लिकेशंस, नई दिल्ली
दोपहर 3 से सायं 5 बजे तक	साहित्यिक कार्यशाला	सभागार 1	6	बी. जैन पब्लिशर्स प्रा.लि., नई दिल्ली
दोपहर 3 से सायं 5 बजे तक	पुस्तक उद्योग सम्मेलन	सभागार 2	6	द फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स, नई दिल्ली
दोपहर 3 से सायं 5 बजे तक	पुस्तक लोकार्पण समारोह	सभागार 3	14	कलावती प्रकाशन, नई दिल्ली
सायं 5 से 7 बजे तक	साहित्यिक कार्यशाला	सभागार 1	6	बी. जैन पब्लिशर्स प्रा.लि., नई दिल्ली
सायं 5 से 7 बजे तक	साहित्यिक कार्यक्रम	सभागार 2	6	फ्लिपकार्ट.कॉम, नई दिल्ली
सायं 5 से 7 बजे तक	संगोष्ठी	सभागार 3	14	पंजाबी हेल्पलाइन, दिल्ली

बाल मंडप में आज (हॉल नं. 14)

तिथि/समय	आयोजक	गतिविधि
पूर्वाह्नः 10.30 बजे से 5.00 बजे तक	नेशनल बुक ट्रस्ट के अनुभाग	'माई लिटिल इंडिया' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, वक्ता- प्रयाग शुक्ल, दास बेन्हूर, सुभद्रासेन गुप्ता (राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र), सुबीर रॉय, आबिद सुरती, विकी आर्य, देवज्योति दत्ता, मानसी सुब्रहमण्यम, सायोनी बसु, विकास नारायण राय, अरूप कुमार दत्ता, आनंद वर्धन सिंह, के.के. कृष्णकुमार

थीम पेवेलियन : भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष (हॉल नं. 7)

दोपहर 12 से 1 बजे – फिल्म और मंच अदाकारा सुषमा सेठ के साथ सत्र – अमेरीयलिस पब्लिकेशंस; **दोपहर 2 से 3.30 बजे**– परिसंवाद 'वर्ल्ड इमेजेस : रिप्रेटेशन ऑफ द मार्जिनलाइज्ड इन कंटेंपरेरी इंडियन सिनेमा एंड लिटरेचर' (सतीश वर्मा, मंगलेश डबराल, असगर वजाहत, असद जैदी, एस. आनंद) – नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया; **सायं 4.30 से 5.30 बजे** – विमर्श एवं लोकार्पण (शांतनु धर, सतीश कौशिक, दीपा चौधरी), आयोजक : ओम बुक्स; **सायं 5.30 से रात्रि 8 बजे** – फिल्म प्रदर्शन : साहिब बीवी और गुलाम (1962, हिंदी, साथ में उपशीर्षक अंग्रेजी में) बिमल मित्र के उपन्यास पर केंद्रित अबरार अल्वी की प्रस्तुति।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

शाम 6 से 8 बजे तक, स्थान : **लाल चौक, प्रगति मैदान**, आयोजक : **साहित्य कला परिषद**, दिल्ली सरकार
पंडवानी - लोक संगीत (छत्तीसगढ़), मध्य प्रदेश का लोक नृत्य (राई, बधाई, नवता, लाठी), लोक संगीत व लोक रंग

मुख्य संपादक : **डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन'**, कार्यकारी संपादक : **पंकज चतुर्वेदी**, संपादकीय सहयोग : **दीपक कुमार गुप्ता**, उत्पादन : **देवी दीन**, सज्जा : **ऋतुराज शर्मा, सविता प्रसाद**

संवाददाता (आई.आई.एम.सी.) : **अविनाश कुमार चंचल, सुरेश बिजरानिया, पूर्वा कुमारी, विनय प्रकाश त्रिपाठी**

मेला वार्ता, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा 20वें विश्व पुस्तक मेले के लिए प्रकाशित विशेष बुलेटिन है। इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति होना आवश्यक नहीं है।

श्री एम.ए. सिकंदर, *निदेशक*
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित एवं पुष्पक प्रेस प्रा.लि., ओखला, नई दिल्ली-110 020 द्वारा मुद्रित।